उत्तमाचरण

देव पूजा गुरुपास्ति, स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानं, षट् कर्माणि दिने दिने॥

१. देव पूजा

देव शास्त्र गुरु के चरण, जो पूजै धरि प्रीत।
मन वांछित फल सो लहे, लहे मुक्ति नवनीत॥

प्रति दिन स्नानादि से निवृत हो शुद्ध प्रासुक द्रव्य लेकर अष्ट द्रव्यों से शुद्ध भावों के साथ देव, शास्त्र, पूजन करना। पूजा, अभिषेक पूर्वक होती है।

२. गुरु पास्ति

गुण छतिस पच्चिस आठ बीस, भव तारण तरण जहाज ईश।
गुरू की महिमा वरणी न जाय, गुरू नाम जपो मन वचन काय॥

आचार्य उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी की भक्ति पूर्वक स्तुति करना, पूजा करना, धर्मोपदेश सुनना, वैयावृत्य आदि द्वारा उनका वहुमान करना।

३. स्वाध्याय

घन कन कंचन राज सुख, सबहि सुलभ कर जान॥
दुर्लभ हैं संसार में, एक जथारथ ज्ञान ॥

आगम प्रणीत परम्पराचार्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों का क्रमशः आद्योपान्त चिंतन मनन करना। स्वाध्याय से ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

४. संयम

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करहू।
संयम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं।

मन और पांचों इन्द्रियों की वढ़ती हुई इच्छाओं पर नियन्त्रण करना और हूसादि पांच पापों से विरक्त होना संयम है।

५. तप

इच्छा दुख की मूल हैं, अवगुण की है खान।
इच्छा तजि तप जो करे, पावे केवल ज्ञान॥

मन, इन्द्रिय और शरीर के इष्ट विषयों के ग्रहण और अनिष्ट विषयों के छोड़ने की इहलोक तथा परलोक सम्वन्धी इच्छाओं को रोकना तप है।

६. दान

दान चार परकार, चार संघ को दीजिये।
घन बिजली उनहार, नर भव लाहो लीजिये॥

स्व पर कल्याण हेतु अपने कमाये हुये न्यायोपार्जित द्रव्य में से श्रद्धा भक्ति पूर्वक आहार औषध शास्त्र एवं अभयादि के लिये द्रव्य देना दान है।